17 सितम्बर 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 2 सितम्बर से 11 सितम्बर, 2011 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

मुम्बई (भायन्दर-वेस्ट) : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर जयपुर से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार गाथा 14, दशलक्षण धर्म, भगवान आत्मा, आत्मा की प्राप्ति का उपाय और क्षमावणी विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। दोपहर और रात्रि में पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित जगदीशजी, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित वरुणजी शास्त्री, विदुषी अनुप्रेक्षा जैन शास्त्री एवं विदुषी मुक्ति जैन शास्त्री के प्रवचनों और कक्षाओं का लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया, तत्पश्चात् डॉ. श्रेयांसजी सिघई शास्त्री (विभागाध्यक्ष-जैनदर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर) द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के आस्रव अधिकार पर प्रवचन हुये। दोपहर में श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती ज्योति सेठी द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व छात्र प्रवचन के पश्चात् पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा 'धर्म के दशलक्षण' विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि यहाँ सुगन्ध दशमी के दिन महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों द्वारा सायंकाल 'पंचकल्याणक महामहोत्सव' विषय पर आधारित भव्य सजीव झांकी का आयोजन किया गया, जिसकी जयपुर के हजारों लोगों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ ने संपन्न कराये। समस्त कार्यक्रम पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ प्रतिदिन नित्यनियम पूजन के उपरान्त ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के विभिन्न विषयों पर एवं सायंकाल समयसार कलश के आधार से प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

राजकोट (गुज.) : यहाँ प्रतिदिन दशलक्षण विधान के पश्चात् ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली द्वारा प्रात: प्रवचनसार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्ग प्रकाशक के विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

मुम्बई (बोरीवली) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला साथ ही समाज के विशेष आग्रह पर रात्रि में जैन भूगोल विषय पर सारगर्भित युक्तिसंगत कक्षा ली गई। रात्रि में प्रवचन के पूर्व गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन होता था। दोपहर में विदुषी मुक्ति जैन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षाएं ली गई।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना ने संपन्न कराये।

शिक्षण शिविर संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन गुजरात प्रांत के तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 23 अगस्त तक 19वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के अतिरिक्त पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित दीपकभाई कोटडिया अहमदाबाद, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम एवं पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री ध्रुवधाम द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश दिल्ली व गुजरात से लगभग 1500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर आमंत्र

ण पत्रिका

सम्पादकीय – 64

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा- १०१

विगत गाथा में निश्चयनय एवं व्यवहारनय से कालद्रव्य का कथन किया है।

अब प्रस्तुत गाथा में काल के 'नित्य' और 'क्षणिक' – ऐसे दो विभागों का कथन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

कालो त्ति य ववदेसो सब्भावपरूवगो हवदि णिच्चो।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई ।।१०१।।

(हरिगीत)

काल संज्ञा सत प्ररूपक नित्य निश्चय काल है।
उत्पन्न-ध्वंसी सतत् रह व्यवहार काल अनित्य है।।१०१।।

'काल' ऐसा व्यपदेश (कथन) सद्भाव का प्ररूपक है, इसलिए निश्चयकाल नित्य है। दूसरा व्यवहार काल उत्पन्न-ध्वंसी है। वह व्यवहारकाल क्षणिक होने पर भी प्रवाह की अपेक्षा दीर्घस्थिति का भी कहा जाता है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि काल के नित्य व क्षणिक – ऐसे दो विभाग हैं। ''यह काल है, यह काल है'' ऐसा करके जिस द्रव्य विशेष का कथन किया जाता है, वह द्रव्य अपने सद्भाव को प्रगट करता हुआ नित्य है तथा जो उत्पन्न होते ही नष्ट होता है वह व्यवहार काल उसी द्रव्य विशेष की 'समय' नामक पर्याय है; परन्तु वह क्षणिक होने पर भी अपनी संतति की दृष्टि से उस दीर्घकाल तक रहने वाला कहने में दोष नहीं है। इसी कारण आवलिका, पल्योपम, सागरोपम इत्यादि व्यवहारकाल कहने का भी निषेध नहीं है।

इसी गाथा के भाव को कवि हीराचन्दजी काव्य में कहते हैं :-

(सवैया इकतीसा)

'काल' इन दोइ आंक मध्यवाची अरथ मैं,
निहचै सरूप जानौ नित्यकाल चित है।
उत्पन्न होइ नासैं द्रव्य का विषै भासै,
समय नाम पर्याय-काल सो अनित्य है।।
सोई काल छिनभंगी संतति नय अंगी है,
दीर्घ लौं सथाइ-पल्य-सागर उदित है।
निहचै है काल नित्य द्रव्यरूप मित तातैं,
विवहार छिन साधै सोई समचित है।।४३७।।

(दोहा)

अपने सहज सुभाव सौं, रहै सुनिहचै होइ।
पर की छाया जहँ परै, तहँ विवहार विलोइ।।४३८।।

कवि कहते हैं कि 'काल' नाम निश्चय काल का सूचक है, अस्तिवाचक है तथा नित्य है और कालद्रव्य पर्याय से अनित्य है। पल्य, सागर आदि व्यवहार काल है। निश्चय काल अविनाशी है तथा व्यवहार काल क्षणिक है।

इसी भाव को गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने व्याख्यान में कहा है कि काल शब्द निश्चयकाल का सूचक है। जिसतरह जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म द्रव्य हैं, उसीतरह 'काल' भी द्रव्य है, काल के असंख्य कालाणु हैं।

व्यवहार काल में सबसे सूक्ष्म 'समय' है। वह एक समय की अवस्था है। वह उत्पन्न-ध्वंसी है तथा निश्चय कालाणु की पर्याय है। उन्हें 'समय' की भूत, भविष्य व वर्तमानरूप परम्परा से कहा जाय तो उससे नक्की होता है कि निश्चयकाल अविनाशी है तथा व्यवहारकाल क्षणिक हैं।

काल वस्तु है, पर उसके काय नहीं हैं; क्योंकि वह एक प्रदेशी है तथा काय बहुप्रदेशी होती है। कालद्रव्य में रुखापन व चिकनापन नहीं है। इसकारण वह एक प्रदेशी ही है, फिर भी सागरोपम, पल्योपम कहने की अपेक्षा से भी कालद्रव्य का कथन होता है। ●

(पृष्ठ 5 का शेष...)

हाँ, यह बात अवश्य है कि भक्ति के काल में जो पुण्यबंध होता है, उसके उदय में आने पर बाह्य में कुछ अनुकूलता हो जाती है; पर करणानुयोग के स्वाध्याय से तो ज्ञान होने के साथ-साथ भक्ति से भी अधिक पुण्यबंध होता है; क्योंकि **भक्ति में मात्र पुनरावृत्ति (रिपीटीशन) होती है; अत: मन यहाँ-वहाँ अशुभ में भी चला जाता है; पर करणानुयोग के स्वाध्याय में नया-नया विषय जानने में आने से उपयोग भटकता नहीं है, अशुभ में जाता नहीं है; इसकारण उत्कृष्ट शुभभाव होने से उत्कृष्ट कोटि का और अधिक पुण्यबंध होता है। अत: भक्ति से स्वाध्याय हर दृष्टि से श्रेष्ठ ही है; क्योंकि इसमें पुण्यबंध के साथ-साथ ज्ञान की भी प्राप्ति होती है, दुहरा लाभ है।** (क्रमश:)

शोक समाचार

खड़ैरी (म.प्र.) निवासी श्रीमती बेटीबाई माताश्री श्री साव लालचंद बाबूलालजी का 96 वर्ष की आयु में दिनांक 13 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान एवं पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

81

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

बाईसवाँ प्रवचन

मोक्षमार्गप्रकाशक का आठवाँ अधिकार चल रहा है। इसमें उपदेश का स्वरूप समझाया जा रहा है। उपदेश के स्वरूप के अंतर्गत चार अनुयोगों की चर्चा चल रही है। विगत प्रवचनों में अनुयोगों का प्रयोजन, व्याख्यान विधान और कथन पद्धति की चर्चा हुई।

अब अनुयोगों के संबंध में जिन दोषों की कल्पना की जाती है; उन कल्पनाओं का निराकरण करते हैं।

प्रथमानुयोग के संबंध में कुछ लोग कहते हैं कि पुराणों में रागवर्द्धक श्रृंगारादिक का और द्वेषवर्धक युद्धों का वर्णन बहुत करते हैं; उनके निमित्त से राग-द्वेष बढते हैं; इसलिए ऐसा कथन करना ठीक नहीं है, ऐसे कथनों को सुनना-पढना भी ठीक नहीं है।

ऐसे लोगों से कहते हैं कि यदि कथा कहना हो तो सभी बातों का वर्णन करना जरूरी होता है, परोक्ष कथन को बढ़ा-चढ़ाकर न कहें तो उसका स्वरूप भासित नहीं होता। यदि अन्त में भोगों के त्याग करने की महिमा बताना है तो पहले भोगों का विस्तृत वर्णन अपेक्षित ही है; क्योंकि असीम भोगों की उपलब्धि होने पर भी उन्हें तृणसम त्याग दिया - ऐसा कथन करने से भोगों के त्याग की महिमा आये बिना नहीं रहती।

अरे, भाई ! रागी जीवों का मन अकेले वैराग्य कथन में नहीं लगता। इसलिए जिसप्रकार बालक को कड़वी औषधि मीठे बतासे में रखकर खिलाई जाती है; उसीप्रकार **यहाँ आचार्यदेव रागी जीवों को भोगादि के कथन के माध्यम से धर्म की रुचि कराते हैं।** फिर भी यदि किसी तीव्र रागी की धर्म में रुचि न जगे और रागादिक बढ़ जावें तो आचार्य क्या करें ?

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''जैसे कोई चैत्यालय बनवाये, उसका प्रयोजन तो वहाँ धर्मकार्य कराने का है; और कोई पापी वहाँ पापकार्य करे तो चैत्यालय बनवानेवाले का तो दोष नहीं है। उसीप्रकार श्रीगुरु ने पुराणादि में श्रृंगारादिक का वर्णन किया; वहाँ उनका प्रयोजन रागादिक कराने का तो है नहीं, धर्म में लगाने का प्रयोजन है; परन्तु कोई पापी धर्म न करे और रागादिक ही बढ़ाये तो श्रीगुरु का क्या दोष है ?[१]''

आचार्यों ने तो महापुरुषों के चरित्र के माध्यम से रागी जीवों को भी धर्म से लगाने के लिए प्रथमानुयोग के शास्त्रों की रचना की है; यदि किसी तीव्र रागी जीव को उनके अध्ययन से भी राग का ही पोषण होता है, तो फिर इसमें आचार्यों का तो कोई दोष है नहीं।

दूसरी बात यह है कि जिसप्रकार कामी पुरुषों की कथा सुनने पर सुननेवाले को काम वासना बढ़ती है, कामभाव का प्रेम उमड़ता है; उसीप्रकार **धर्मात्मा पुरुषों की कथा सुनने से सुननेवाले को धर्मप्रेम उत्पन्न होता है; इसलिए प्रथमानुयोग का अभ्यास करना योग्य ही है।**

कुछ लोग कहते हैं कि करणानुयोग के स्वाध्याय करने से गुणस्थान, मार्गणास्थान, कर्मप्रकृतियों और त्रिलोकादि का जानना होता है; उससे अपना कुछ कार्य तो होता नहीं। इससे तो यही अच्छा है कि भक्ति करें, व्रत-दानादि करें या आत्मानुभव करें तो अपना कुछ भला हो।

ऐसे लोगों से पण्डित टोडरमलजी कहते हैं –

''परमेश्वर तो वीतराग हैं; भक्ति करने से प्रसन्न होकर कुछ करते नहीं हैं। भक्ति करने से कषाय मंद होती है, उसका स्वयमेव उत्तम फल होता है। सो करणानुयोग के अभ्यास में उससे भी अधिक मंद कषाय हो सकती है, इसलिए उसका फल अति उत्तम होता है।

तथा व्रत-दानादिक तो कषाय घटाने के बाह्य निमित्त के साधन हैं और करणानुयोग का अभ्यास करने पर वहाँ उपयोग लग जाये, तब रागादिक दूर होते हैं सो यह अंतरंग निमित्त का साधन है; इसलिए यह विशेष कार्यकारी है।

तथा आत्मानुभव सर्वोत्तम कार्य है; परन्तु सामान्य अनुभव में उपयोग टिकता नहीं है, इसलिए अन्य विकल्प होते हैं; वहाँ करणानुयोग का अभ्यास हो तो उस विचार में उपयोग को लगाता है।

यह विचार वर्तमान में भी रागादिक घटाता है और आगामी रागादिक घटाने का कारण है; इसलिए यहाँ उपयोग लगाना।

जीव-कर्मादिक के नानाप्रकार से भेद जाने, उनमें रागादिक करने का प्रयोजन नही हैं , इसलिए रागादिक बढ़ते नहीं हैं; वीतराग होने का प्रयोजन जहाँ-तहाँ प्रगट होता है, इसलिए रागादिक मिटाने का कारण है।[१]''

मोक्षमार्गप्रकाशक के उक्त कथन में अत्यन्त स्पष्टरूप से यह समझाया गया है कि ऐसा तो है नहीं कि भक्ति करने से भगवान प्रसन्न हो जावेंगे और तुझे कुछ दे देंगे, तेरी मनोकामना पूरी कर देंगे; क्योंकि **जैन मान्यतानुसार तो भगवान पूर्ण वीतरागी हैं, वे किसी का कुछ करते नहीं हैं। वस्तुत: बात तो यह है कि कोई किसी का भला-बुरा कर ही नहीं सकता है; क्योंकि दो द्रव्यों के बीच में अत्यन्ताभाव की वज्र की दीवाल है।**

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २८९

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९०

शिविर आमंत्र

ण पत्रिका

पाठकों के पत्र

वीतराग-विज्ञान के हीरक जयन्ती विशेषांक को पढ़कर **सोलापुर (महा.) से डॉ. प्रकाशचंदजी खड़के** लिखते हैं कि -

'वीतराग-विज्ञान विशेषांक में डॉ. भारिल्ल के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन बहुत बढ़िया हुआ है। उन सभी समीक्षकों को मैं धन्यवाद देता हूँ। संपादक महोदय को भी धन्यवाद। उचित समय पर उचित व्यक्ति का उचित साहित्य (समीक्षा) आपने प्रकाशित किया है। आप सफल संपादक हैं। डॉ. साहब का 75वाँ जन्मदिन, अमृतयोग है; आपने जनसामान्य को अमृतपान कराया है। इसी अवसर का लाभ उठाकर सेमिनार आयोजित करके मुमुक्षुओं को ज्ञान-दान दिया है। संयोजक की कल्पना की प्रशंसा के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की विद्वत्ता से परिचित हो गया है। डॉ. साहब बहुत बड़े आदमी हैं। आपने बड़े ग्रन्थ लिखे हैं, लम्बे भाषण दिए हैं। बड़े-बड़े ग्रन्थों (जैनागम) को आत्मसात करके सबके गले उतारा है। सचमुच भारिल्लजी श्रेष्ठ साहित्यकार हैं, क्रांतिकारी हैं, शान्तिदूत हैं, युगपुरुष हैं, प्रवचनकारों के निर्माता हैं। डॉ. भारिल्लजी का सम्पूर्ण जीवन और शरीर जिनवाणी के लिये समर्पित है। आपने विश्व में एक जैन अध्यात्म केन्द्र का निर्माण करके ईश्वरीय कार्य किया है।

''उनको हमने ठहरा दिया है, पानी की एक झील बनाकर,
दरिया बना देते तो, बहुत दूर निकल जाते।''

डॉ. भारिल्लजी की वाणी में शक्ति है, हृदय में जिनभक्ति है। आपने जैनागम के रहस्य को खोलकर, सबके सामने रखा है। आंधी, तूफान को सहकर वटवृक्ष की तरह अविचल बनकर भगवान की वाणी को फिर से प्रतिध्वनित किया है। आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अमृतचंद्र, आचार्य जयसेन का कार्य अविरत, अक्षुण्ण बनाए रखा है। आपने महान पुण्य का कार्य किया है। डॉ. भारिल्ल की ओर अंगुली निर्देश करके हम छात्रों को समझाते हुए कहते हैं - ऐसे होते हैं पण्डित, ऐसे होते हैं गणधर। देश-विदेश के ज्ञान पिपासु-जिज्ञासु को आपने मंत्रमुग्ध किया है। जैनवृक्ष के पतझड़ में आप फिर से बहार लाए हैं। डॉ. भारिल्लजी ने आधुनिक समाज को नयी चेतना दी है, जीवन जीने की दृष्टि दी है। समाज को आज डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की बहुत आवश्यकता है।

आचार्य पूज्यपाद के संदर्भ में जानकारी भेजने हेतु

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री जैनापुरे राजकोट ''आचार्य पूज्यपाद : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व'' विषय पर पीएच.डी. कर रहे हैं; अत: प्रबुद्ध वर्ग, विद्वत्वर्ग एवं अभ्यासु मुमुक्षु समाज से विनम्र निवेदन है कि आचार्य पूज्यपाद के साहित्य (सर्वार्थसिद्धि, जैनेन्द्र व्याकरण, समाधिशतक, शब्दावतार, इष्टोपदेश) के विषय में प्राचीन, ताडपत्र, संस्करण, ऐतिहासिक प्रमाण आदि जो भी जानकारी आपके पास उपलब्ध हो, उसकी जानकारी निम्न पते पर भेजें - **संपर्क :** पण्डित सुनीलकुमार शास्त्री, दिगम्बर जैन मन्दिर, 5 पंचनाथ प्लॉट, राजकोट (गुज.), मो.- 93759-76646

वेदी शिलान्यास संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ दिनांक 6 व 7 अगस्त को कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में नवीन निर्माणाधीन श्री सीमन्धर जिनालय एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर में 2 दिवसीय वेदी एवं शिखर शिलान्यास महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री ज्ञानमलजी लुहाड़िया परिवार ने किया।

इस अवसर पर संजयजी शास्त्री द्वारा समयसार की गाथा 1 से 6 तक प्रवचन हुआ, तत्पश्चात् शिलान्यास विधि का कार्यक्रम पण्डित अशोकजी लुहाड़िया द्वारा संपन्न कराया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री पदमचंदजी पहाड़िया इन्दौर उपस्थित थे। कार्यक्रम में 11 शिलान्यास हुये, जिसमें मुख्य वेदी का शिलान्यास श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार कोटा ने, जिनवाणी मन्दिर के चार शिलान्यास श्री महाचंदजी सेठी परिवार, श्री महावीरजी चौधरी परिवार, श्री निर्मलकुमारजी बघेरवाल परिवार भीलवाड़ा एवं श्री भागचंदजी कालिया व श्री कन्हैयालालजी दलावत परिवार उदयपुर ने किये। मन्दिर के ऊपर मुख्य शिखर का शिलान्यास श्री चांदमलजी निर्मलकुमारजी लुहाड़िया परिवार भीलवाड़ा, श्री पदमचंदजी पहाड़िया, श्री विनयजी बड़जात्या, श्री सुनीलजी काला इन्दौर व श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ ने किया। आगे छवि शिखर का शिलान्यास श्री कमलजी बड़जात्या व श्री ज्ञानमलजी पाटोदी परिवार ने किया।

कार्यक्रम में इन्दौर, मुम्बई, कोटा, बिजौलिया, सिंगोली, अजमेर, उदयपुर, विजयनगर, चित्तौड़गढ एवं बेगू से अनेक साधर्मीयों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127